ISSN : 2581-8872 Vol - 4, No. - 5, June - 2022

Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research

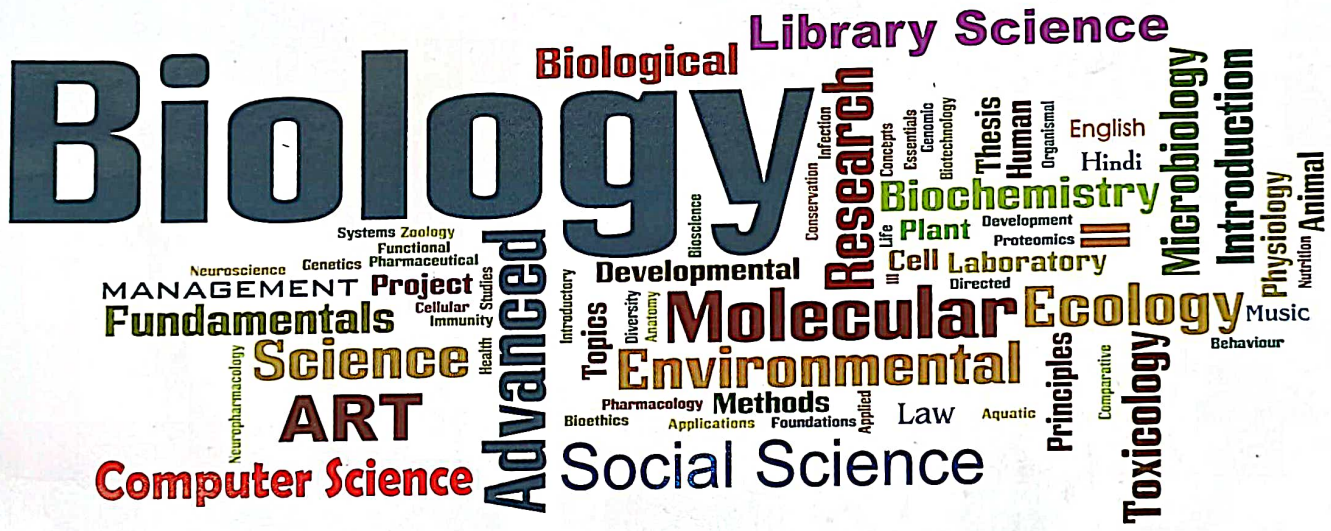

Peer Reviewed - Refereed Journal
Impact Factor - 4.8, Open Access,
Double Blind, Monthly Online Journal

Google scholar | ISRS International Scientific Research Solution | Indian Tech | GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

EDITOR
PRASHANT KUMAR

PUBLISHED BY
International Scientific Research Solution
Web : www.srfresearchjournal.com
Email : isrsjournal@gmail.com

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	समराङ्गण सूत्रधार के सन्दर्भ में पुर–निवेश	डॉ. प्रिंस शर्मा	1-4
2	जनांकिकी का महत्व व उपयोगिता	डॉ. (श्रीमती) रश्मि चौबे श्रीमती मीना तिवारी	5-8
3	मध्यप्रदेश राज्य में हस्तशिल्प एवं हाथकरघा उद्योग की योजनाएँ एवं उनकी भूमिका का अध्ययन	डॉ. नुपूर निखिल देशकर कु. अनामिका सिंह ठाकुर	9-13
4	इतिहास में वस्तुनिष्ठता : एक अध्ययन	डॉ. अंजना	14-18
5	ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का स्वच्छता पर प्रभाव : वाराणसी शहर के विशेष संदर्भ	डॉ. ए.सी. तिवारी अमित प्रकाश सिंह	19-31
6	वर्तमान सन्दर्भ में हिन्दी–शिक्षण एक चुनौती	रीतू	32-34
7	साहित्य की विकास यात्रा में लोक–तत्त्वों की भूमिका : एक अध्ययन	Dr. (Smt.) Pooja Thakur	35-38
8	व्यासभाष्यानुसन्धानपूर्वकं पातञ्जल-अष्टाङ्गयोगे वेदान्तानुसारेण यमविमर्शः	अनिल कुमार द्विवेदी	39-44
9	वैदिक काल से बौद्धिक काल तक : शिक्षा व्यवस्था	सचिन सिंह	45-47
10	विकास योजना एवं कोरवा जनजातियों के सामाजिक, आर्थिक विकास में योगदान का मूल्यांकन	Dr. Susmita Mohapatra	48-53
11	घरानों के विकास में राजदरबारों का योगदान	डॉ. विशाल जैन अनुपम गुप्ता	54-55
12	भारत के आधुनिक जीवन के जनक राजा राममोहन राय	प्रो. (डॉ.) रीटा शर्मा	56-57
13	हरित विपणन की प्रासंगिकता	डॉ. ममता धाकड़	58-63
14	योग और गर्भस्थ शिशु	प्रो. डॉ. लालजीत पचौरी रूबी श्रीवास्तव	64-66
15	साहित्य व समाज में वृद्ध विमर्श	श्रीमती कंचन चौरसिया	67-70
16	"मुग़ल कालीन संगीत के विकास पर तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव" (एक समालोचनात्मक अध्ययन)	डॉ. शैफाली यादव	71-73

Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research (U.I.J.M.S.R.)
Peer Reviewed - Refereed Journal & Impact Factor - 4.8, Open Access, Double Blind
Monthly Online Journal, ISSN : 2581-8872, Vol. : 4, No. : 5, June - 2022
2022

साहित्य व समाज में वृद्ध विमर्श

श्रीमती कंचन चौरसिया
सहायक प्राध्यापक शिक्षास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश :– साहित्य प्रारंभ से ही समाज का दर्पण माना जाता है। साहित्य में प्राचीन काल से ही वृद्ध विमर्श को स्थान दिया गया है। मानव जाति के इतिहास में साहित्य का विशेष स्थान है। साहित्य समाज की वास्तविकता का चित्रण करता है। साहित्य समाज की आधारशिला होता है। साहित्य में समाज की समस्त दशाओं एवं समस्त आयामों पर प्रकाश डाला जाता हैं। बीसवी सदी में समाज में बदलाव तेज हुआ। व्यक्ति जब से तकनीकी पर आश्रित हुआ है, तव से समाज की महत्वपूर्ण संस्था परिवार व परिवार का अति–महत्वपूर्ण सदस्य घर के मुखिया पर इस बदलते दौर एवं परीवर्तनों की मारी मार पड़ी है। इक्कसवीं सदी में मुखिया का क घटकर बौना ही रह गया है। साहित्य में परिवर्तित सामाजिक परिस्थितयां एवं उनमें वृद्धो की समस्याओं एवं विभिन्न आयामों पर प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक प्रकाश डाला गया है। वृद्धावस्थ जीवन की वह अवस्या है जिसमें उम्र मानाव जीवन की औसत काल के समीप या उससे अधिक हो जाती है। वृद्ध व्यक्तियों को उचित व्यवहार, मान–सम्मान एवं उनके प्रति सद्व्यवहार के फलस्वरूप समाज को एक नवीन उत्तेजना व दिशा मिल सकती है।

मुख्य बिन्दु :– साहित्य, समाज, वृद्ध, विमर्श।

व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज बनता है और इस समाज का एक अह्म हिस्सा का है, फिर भी ये युवा पीढ़ी से अलग व कटे–कटे रहने पर मजबूर होते है। इस संसार में विभिन्न धर्म, जातियां, संस्कृतियां तथा नस्ले है परंतु इन सभी के अंदर वृद्धावस्था अपने अंदर समेट लेनी की समानता है। क्योंकि इस धरती पर जन्म लेने वाला प्रत्येक जीव मृत्यु तक के सफर में वृद्धावस्था के रास्ते से गुजर कर अवश्य जाता है। अर्थात् मानव एवं प्राणी जगत की विकास की अवस्थाओं में शैशवास्था से वृद्धावस्था तक व्यक्ति तमाम पढ़ावों को पार करता है। जिसमें वृद्धावस्था एक ऐसी अवस्था है जो कि अपने अंदर अनंत अनुभवों, ज्ञान से परिपूर्ण होते हुए भी विभिन्न समस्याओं से जूझती हुई अपने पथ पर अग्रसर होती है। मनुष्य जो कि धरती का सबसे शक्तिशाली प्राणी माना जाता है एक आयु के बाद वाद उसे भी विविभन्न समस्याओं जैसे, मानसिक शारीरिक, सांवेगि, गिरता स्वास्थ्य, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक अकेलापन और कभी–कभी पारिवारिक–सामाजिक अनादर आदि से गुजरना पड़ता है। इन समस्याओं के कुछ कारण हैं जैसे कि संयुक्त परिवार का विघटन, एकल परिवार को प्राथमिकता, भौतिक सुख–सुविधाओं में वृद्वि, पीड़ियों में फासला,धन का अत्यधिक महत्व, सांम्पतिक बटवारें, पश्चिमी देशों का प्रभाव, महंग का बढ़ना, सामाजिक सुरक्षा का आभाव, कि उत्तरदायित्वों से पलायन आदि।

साहित्य जो कि समाज का दर्पण है, वह एक सशक्त माध्यम है जो अपने पाठको को किसी खास विषय वस्तु पर आधारित विभिन्न साहित्य की विधाओं के माध्यम से पाठकों के ह्रदयो में गहरे उतर जाने की अभूतपूर्व क्षमता रखता है। वृद्धावस्था एक धीरे–धीरे आने वाली अवस्था है जो स्वभाविक व प्राकृतिक घटना है। वृद्ध का शाब्दिक अर्थ होता है – 'पका हुआ' परिपक्व होता लोकभारती राजभाषा शब्दकोष (हिन्दी–अंग्रेजी) के अनुसार– वृद्ध का अर्थ Old Person होता है। अंगेजी के Old शब्द को हिन्दी में पर्याय माना गया है जिसमें Old का अर्थ–बूढ़ा वृद्ध, पुराना आदि होता है। साहित्य में वृद्ध विमर्श को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया जाने लगा है। साहित्य शब्द अपने आप में ही एक चिन्तन तथा विचारधाराओं का स्वरूप है। साहित्य समाज में व्याप्त व्यवस्थाओं एवं अवस्थाओं के माध्यम से प्रहार किया जाता है। समाज में व्याप्त समस्याओं आदि पर साहित्य द्वारा चिन्तन, मनन करते हुए समाधान प्रस्तुत करता है तथा समाज का मार्ग प्रशस्त करता हैं समाज या व्यति से परे साहित्य का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता क्योंकि साहित्य जन–जीवन की ही व्याख्या करता है और जन–जीवन समाज का ही अंग होता है। आधुनिक युग परिवर्तन का युग है। इस परिवर्तन एवं आगे जाने की दौड़–भाग में हमारे नैतिक मूल्यों, सामाजिक सद्भावना, मानवीयता में ह्रास तथा पारिवारिक मूल्यों का पतन हो रहा है। ऐसी स्थितियो में अपार अनुभवोंह एवं ज्ञान के भण्डार हमारे वृद्धों का न ही हम मार्गदर्शन प्राप्त कर पा रहे है और न ही उन्हें यथोचित आदर व सम्मान दे पा रहे है। इस स्थिति में यह अत्यावश्यक है कि वृद्धावस्था पर चिन्तन, मनन एवं